

ISSN 2277- 534X

शोध-समीक्षा का त्रैमासिक प्रकाशन

साहित्य प्रभा

आर.एन.आई- UA- UTTHIN/2002/6511

वर्ष-18

अंक- 04

अक्टूबर-दिसम्बर 2019

सहयोग राशि : 25 रुपये



उत्तराखण्ड के प्रमुख धाम



गंगोत्री, यमुनोत्री, श्री बद्रीनाथ एवं केदारनाथ तथा हेमकुण्ड साहिब



अक्टूबर-दिसम्बर- 2019

साहित्यप्रभा-साहित्यिक त्रैमासिक

वर्ष : 18

अंक : 04

- ★ आशीर्वाद (ब्रह्मलीन) > स्वामी भास्करानन्द पुरी जी महाराज
- ★ संरक्षक > पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह शशि
> डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरूण',
डॉ. अमर सिंह वधान
(प्रो० एमरिटस, डी० लिट्ट)
- ★ प्रधान सम्पादक > डॉ. चन्द्र सिंह तोमर 'मयंक'
- ★ उप सम्पादक > राखी सजवाण
> रूपेश तोमर
- ★ सम्पादकीय सहयोग > डॉ. सुरेश महेश्वरी (जलगौंव)
> डॉ. पीताम्बर अवस्थी (पिथौरागढ़)
> डॉ. अवधेश चन्सौलिया, (ग्वालियर)
✓ > डॉ. (श्रीमती) मनिका शङ्किया (असम)
> डॉ. विजय कुमार वेदालंकार (सोनीपत)
> डॉ. नविला सत्यादास, (पटियाला)
- ★ कम्प्यूटर डिजाईनिंग > मॉडर्न कम्प्यूटर सिस्टम, देहरादून
- ★ विधि परामर्शी > एस.सी. विरमानी, एडवोकेट
> सत्य नारायण सक्सेना (एडवोकेट)
> अरूण सक्सेना (एडवोकेट)

स्वन्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चन्द्र सिंह तोमर 'मयंक' द्वारा मगधनी प्रेम, ग्रीन पार्क मज्जी मण्डी के सामने महारनपुर गंड़, देहरादून में मुद्रित और आमवाला (अपर) पो. तपोवन (नालापानी) देहरादून में प्रकाशित।

EDITORIAL-CORRESPONDANCE

Dr. Chandra Singh Tomar 'Mayank'

Amwala (Upper) P.O. Tapovan
(Nalapani) Dehradun-248008 (India)

Ph : 9411575129.

E-Mail: editor_sahityaprabha@rediffmail.com

पंजी. संख्या : UTT/HIN/2002/6511

इस अंक में.....

विषय वस्तु	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
• सम्पादक मण्डल	• विषय सूची	• 01
• सम्पादकीय	• सम्पादक की कलम से	• 02
• फिर मिला खत आपका	• पत्र मजूषा (पाठकों के पत्र)	• 03
• ब्रिटेन और शिक्षा व्यवस्था	• डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय	• 4-15
• प्रांतीय भाषाओं पर ...	• डॉ. मनिका शङ्किया	• 16-17
• राष्ट्रीयता क्या है ...	• प्रो. शरद नारायण खरे	• 18-19
• विशिष्ट साहित्य का ...	• डॉ. अमर सिंह वधान	• 20-24
• मीडिया एवं सामाजिक...	• डॉ. ललित चंद जोशी	• 25-31
• गीत और नवगीत में...	• डॉ. राधेश्याम बन्धु	• 32-34
• भारतीय गीत परम्परा	• डॉ. राम सनेही लाल शर्मा	• 35-37
• साम्प्रदायिक सद्भाव ...	• रत्ना ओझा	• 38-39
• एक दूसरे के पर्याय हैं...	• उमा शंकर मिश्र	• 40-41
• दो देशों के राष्ट्रगान ...	• डॉ. प्रभु चौधरी	• 42-43
• कानपुर का प्रेरणादायी ...	• डॉ. रमेश वर्मा	• 44-45
• कुमाउनी युवती की ...	• समीक्षा	• 46-47
• 'नवगीत के नये.....	• समीक्षा	• 48-49
• कविताएं	• डॉ. प्रभु चौधरी, डॉ. सुरेश उजाला	• 50
• क्या आन्दोलन से...	• हरिलाल 'मिलन'	• 51-52

सहयोग राशि

एक प्रति रूपये	Rs. 25/-
मात्र संस्थागत (Bulk) में one year-	Rs. 100/-
पांच वर्षीय (5 year)	Rs. 500/-
आजीवन (Life)	Rs. 1500/-
संरक्षक (Patron)	Rs. 10,000/-
विदेशों में आजीवन (Abroad)	US डॉलर \$ 40/-

नोट-डाक खर्च आदि एक वर्ष के लिए रु. 60/- पंजीकरण शुल्क अनिवार्य रूप से सदस्यता राशि के साथ जोड़ा गया है। मात्र पांच वर्षीय अथवा आजीवन सहयोग राशि ही स्वीकार होगी। संस्थागत जो (Bulk) में एक सौ से अधिक पत्रिकाएं क्रय करेंगे उनके लिए एक वर्षीय शुल्क डाक सहित रु. 160/- प्रति सदस्य होगा। अतः सदस्यगण इसी आधार पर अपना नवीनीकरण अथवा सदस्यता गृहण करने की कृपा करें।

समस्त पाठकगण एवं साहित्यप्रभा परिवार से जुड़े सभी सुधीजनों/ प्रबुद्धजनों को गाँधी जयन्ती, शास्त्रीय नवरात्र, रामनवमी, दशहरा, दीपावली, भाईदूज, ईद-ए-मिलाद, गुरुनानक जयन्ती, उत्तराखण्ड स्थापना दिवस एवं क्रिसमस-डे आदि के मधुर पर्वों की अर्जत मंगलकामनाएँ।

-सम्पादक

पत्रिका में छपी सामग्री पर सम्पादक की सहमति होना जरूरी नहीं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून होगा। पत्रिका में सभी पद अवैतनिक हैं।

प्रांतीय भाषाओं पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

□डॉ० मनिका शङ्कीया□

बदलते समय के परिदृश्य में व्यक्ति की मानसिकता भी तदनु रूप बदल रही है। इसके साथ-साथ भूमंडलीकरण के आधुनिक दौर में सामाजिक मूल्य, संस्कृति, विचारधारा भी समानानुपात में प्रभावित हुई है। तेज गति से बदल रही जन आकांक्षाएँ, जिसे हम सामाजिक यथार्थ कह सकते हैं ही आज की नयी कार्य-संस्कृति जन्मदात्री बन गयी है। यह कई मायनों में विवाद के घेरे में है। भूमंडलीकरण के सम्बन्ध में डॉ० योगेन्द्र कुमार जी का कहना है:-

“भूमंडलीकरण (Globalisation) आज का हम सभी का यथार्थ और सच है और इस यथार्थ को पृथ्वी पर उतारने वाला तत्व है विज्ञान और विज्ञान जनित शोध और अनुसंधानों के परिश्रम से पैदा हुई ऑटोमेशन कम्प्यूटरीकरण की प्रौद्योगिकी और संचार क्रांति जिसने अंतर्राष्ट्रीय पूंजी के अवरोधों को दूर करते हुए विश्वभर के बाजारों को एकीकृत कर डाला।” (परमिता, अक्टूबर-दिसम्बर 2008, पृष्ठ संख्या 19)

भूमंडलीकरण से सम्पूर्ण विश्व एक ‘ग्लोबलविलेज’ में बदल गया है, फासले तो मिट रहे हैं किंतु अजनबीपन खत्म हो रहा है, लेकिन इन सबकी पूंजीवादी सत्ता, मुनाफा खोरी का राज धीरे-धीरे अपना अधिकार जमा रहा है एक तरफ से देखा जाए तो भूमंडलीकरण का चेहरा हमारे उपनिषद का ‘वसुधैवकुटुम्बकम्’ के एक दम करीब है, लेकिन असलियत में भूमंडलीकरण ने इस भूलोक में व्यापारी कुटुम्ब की मनसा लेकर ही प्रवेश किया है। सामान्य अर्थ में हम समझ सकते हैं- भूमंडलीकरण बाजारवाद का दूसरा नाम है। डॉ० योगेन्द्र कुमार ने अपने एक लेख में सुख्यात पत्रकार व सम्पादक श्री प्रभाष जोशी के कथन का उल्लेख इस प्रकार किया है।

सुख्यात पत्रकार व संपादक श्री प्रभाष जोशी भूमंडलीकरण के विकास और खुशहाली के मुखौटे की असलियत का खुलासा

करते हुए कहते हैं; “बाजार आदमी का बनाया हुआ सबसे पुराना संस्थान है। जिस दिन से हमारा समाज बनना शुरू हुआ, उसी दिन से बाजार भी बनना शुरू हुआ। धर्म नहीं था, राज्य नहीं था, राजनीति नहीं थी लेकिन बाजार था। बाजार मानव निर्मित संस्था होते हुए भी आज भष्मासुर बन गया है। बाजार आज कह रहा है कि मैं सेवक नहीं मालिक हूँ। बाजार ही तय करेगा कि मनुष्यता की नियति क्या होगी।” (परमिता, अक्टूबर-दिसम्बर 2008, पृष्ठ संख्या 19)

भाषा मानव के लिए अत्यंत संवेदनशील विषय। भूमंडलीकरण के सलाहकारों ने भारतवर्ष में बड़े शातिराना अंदाज में भारतीय मनीषा की इस संवेदनशीलता को आरंभ में ही संवेदन शून्य करने का काम बड़े कौशल के साथ सम्पन्न कर लिया है। भारत में 1985 के उत्तरार्द्ध में इसका अभियोजन (planing) सम्पूर्ण कर लिया गया। कितने शातिराना अंदाज में शिक्षा को इंसान उसके इतिहास और समाज से काटकर बाजार और कारोबार में डॉ० योगेन्द्र कुमार के कथन में जब हमारे केन्द्रीय शिक्षा विभाग का नाम मानव संसाधन विकास मंत्रालय में परिवर्तित कर दिया गया। मोटा मुनाफा कमाने वाला एक निरे ‘निर्जीव’ से पदार्थ यानी संसाधन (माल) और बिकाऊ उत्पाद के रूप में बदल डाला है। (परमिता, अक्टूबर-दिसम्बर 2008, पृष्ठ संख्या 20)

इस प्रकार मानव को संसाधन बनाने की थियोरी बड़ी खतरनाक है, क्योंकि इस प्रकार शिक्षा का अर्थ हो जायेगा कि आप अर्थव्यवस्था के लिए उपयोगी बनें। इस व्यवस्था में शिक्षार्थी न तो यह जानने की कोशिश करेगा कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है अथवा शिक्षा का उद्देश्य क्या है? स्पष्ट है कि मानव को संसाधन या पूंजी में रूपांतरित करना कितना बर्बर-आदिम और समाज विरोधी है। पूंजीवादी देशों के तेल मर्दन करने वाले कुछ भारतीय नेताओं की अदूरदर्शिता की चपेट में आज के शिक्षार्थी पूर्ण रूपेण स्वयं के

बाजार उपयोगी संसाधन बनने में जुटे हुए हैं। आज उनके लिए अपनी माँ से सीखी ममतामयी भाषा के सम्बन्ध में सोचने के लिए जरा भी अवसर नहीं है और न ही रुचि रह गयी है।

भूमंडलीकरण की नीति तथा चरित्र समझ लेने के बाद भारत जैसे एक प्रगतिशील देश तथा भारत राष्ट्र के अंगीभूत अन्य राज्यों की भाषिक अवस्था की चर्चा करना आसान हो जाएगा। भूमंडलीकरण अर्थात् बाजारवाद की एक चपेट में आकर हिन्दी अपना सौन्दर्य, अपनत्व तथा स्वभाव खो बैठी है। प्रांतीय भाषावेत्ता हिन्दी के प्रति हमेशा एक शिकायत रखते हैं कि हिन्दी के कारण प्रांतीय भाषाएं संकट में आ गयी हैं। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का इसमें बहुत बड़ा हाथ रहा है। इस अभियोग में सच्चाई तो है, लेकिन इस भूमंडलीकरण की अवस्था में आज हिन्दी भी संकटासन्न है। आज व्यवसायिकी माँग के अनुसार भाषायी शुद्धता के स्थान पर संवादों की तत्काल प्रभावी सम्प्रेषणीयता को महत्व दिया जा रहा है। डॉ० मधु जैन ने भूमंडलीकरण और हिन्दी शीर्षक निबंध में लिखा है:-

“टी.वी के विभिन्न चैनलों पर पसरे बच्चे, युवा, वृद्ध आदि सभी वर्ग के लोगों को एक साथ आकर्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। सभी प्रकार के उपभोक्ताओं को समान रूप से पंच लाइन द्वारा प्रभावित करने के लिए उनकी बोली में विज्ञापन परोसे जा रहे हैं। इस प्रकार हिन्दी को अहिन्दी भाषी प्रदेशों में विस्तार मिला है।” (साहित्य भारती, जुलाई-सितम्बर, 2013, पृष्ठ संख्या 130)

भारत के अन्य प्रांत की तरह पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं पर जो संकट आया है, इसका मूल कारण यह भूमंडलीकरण नामक Slow poison ही है, जिसने बहुत धीरे-धीरे स्थानीयता को बड़े कौशल के साथ शक्तिहीन किया है। आज पूर्वोत्तर की अनेक भाषाएँ अपना अस्तित्व बनाये रखने में संघर्ष कर रही हैं। पूर्वोत्तर भारत के सात राज्यों की अपनी राज्यिक भाषा के अलावा यहाँ अनेक जनजातियाँ भी हैं और उनकी अपनी-अपनी बोलियाँ हैं।

शैक्षिक कारण से तथा आर्थिक प्रोन्नतिको सामने रखकर इन जन-जातियों के लोग क्रमशः शहराभिमुखी हो रहे हैं फलतः

इनके तृतीय पुरुष अपनी मातृभाषा से एक दम अलग हो गये हैं। इसका फल यह हुआ कि इन जन जातियों का अपनी भाषा बोलने वालों की संख्या में क्रमशः कमी आ रही है और ये भाषाएँ मृत्युमुखी हो रही हैं ‘अन्तर्राष्ट्रीय जगत और हिन्दी’ शीर्षक निबन्ध में महेशचन्द्र द्विवेदी जी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा की प्रतिष्ठा बनाये रखने में कुछ प्रतिमानों का उल्लेख किया है। उनमें से कुछ निम्नवत् हैं:-

1. उपलब्ध साहित्य की व्यापकता एवं उसका स्तर।
 2. अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों, सेवाओं एवं वाणिज्य में उपयोग।
 3. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्रचलन।
 4. उपयोगकर्ताओं की संख्या एवं उनका क्षेत्रीय विस्तार.....
- आदि। (साहित्य भारती, जुलाई-सितम्बर, 2013, पृष्ठ संख्या 134)

अब अगर हम इन प्रतिमानों की कसौटी पर रखकर पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं पर विचार करें, तो हम देखते हैं कि इनमें से किसी एक में भी ये भाषाएँ खरी नहीं उतरती हैं। यहां तक कि हिन्दी को भी अपनी स्थिति बनाने के लिए अपने चरित्र में बदलाव लाना पड़ रहा है। इस स्थिति में इन प्रांतीय भाषाओं के संकट का कारण हिन्दी का आग्रासन मानना अनुचित होगा।

भूमंडलीकरण ने जिस कौशल का अवलम्बन करके जनसंचार के माध्यम आदि का उपयोग करके गाँव के कोने-कोने में प्रवेश करके अपना जाल बिछा दिया है, उस जाल से बाहर निकलना असम्भव प्रायः दिखाई दे रहा है इनके सामने व्यक्ति का परिचय मात्र उपभोक्ता के रूप में है। आवश्यकता इस बात कि है कि व्यक्ति अपने अपनत्व के प्रति सजग हो। □□□

अध्यापिका, हिन्दी विभाग,
नगाँव गर्ल्स कॉलेज असम

संदर्भ सूची

1. साहित्य भारती, जुलाई-सितम्बर 2013 (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से प्रकाशित)
2. परमिता, अक्टूबर-दिसम्बर 2008